दूसरा अध्याय

२.० : दुष्यन्तकुमार के उपन्यासों का सामान्य परिचय --

२.१ - प्रास्ताविक -

२.२ - छोटे-छोटे सवाल -

२.३ - आँगन में एक वृक्ष -

२.४ - दुहरी जिन्दगी -

२.५ - नि ष्क र्ष --

दूसरा अध्याय

दुष्यन्तकुमार के उपन्यास सामान्य परिचय --

२.१ प्रास्ताविक --

स्वर्गीय दुष्यन्तकुमार त्यागी एक सफल कवि होने के साथ-साथ एक सफल उपन्यासकार भी हैं। उन्होंने अपने समय की सच्चाइयों एवं स्थितियों को उपन्यासों में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। ये स्थितियाँ एवं सच्चाइयाँ थी, पूँजीवाद,जमींदारी, सामंतवाद,वर्ग-संघर्ष आदि। आजादी के बाद देश में कोई पूँजीवादी क्रांति नहीं हुयी और न वर्ग संघर्ष की भावना जड पकड सकी। सामंतों और पूँजीवादियों में एक समझौता होने से सामान्य व्यक्ति के जीवन में विकृतियाँ पनपने लगी। दुष्यन्तजी ने इन्ही स्थितियों को अपने दो छोटे उपन्यासों में प्रस्तुत किया है। जिन्दगी का अंतरविरोध, झूठापन, जीवन की विषमतायें सच्चे रूप में दुष्यन्तजी के उपन्यासों में व्यक्त हुयी हैं।

दुष्यन्तजी के तीन उपन्यास हैं।

१) छोटे-छोटे सवाल - १९६४

२) आँगन में एक वृक्ष - १९६८

३) दुहरी जिन्दगी - अप्रकाशित।

हम तीनों उपन्यासों का क्रमश: परिचय प्रस्तुत करते हैं।

२.२ छोटे-छोटे - सवाल --

दुष्यन्तकुमार इस उपन्यास के साथ उपन्यासकार के रूप में सामने आये। इस उपन्यास की कथा को दुष्यन्त जी ने २६ खण्डों में विभाजित किया है। उनके मित्र राजेन्द्र

यादव ने इस उपन्यास के प्रत्येक खण्ड को शीर्षक दिया है । प्रत्येक खण्ड का नाम इस प्रकार हैं ।

१) इंटरव्यू से पहले
२) सलेक्शन कमेटी
३) गूँगे की दुकान
४) कोठरी
५) कृषि-योजना
६) लौटते हुए
७) प्रिंसीपल की कुरसी
८) हॉस्टल
९) विमर्श और परामर्श
१०) समझौता
११) बजती हुयी साँकलें
१२) जाले
१३) संरक्षक
१४) टूटी हुयी छत
१५) तूफान
१६) मोड़
१७) अधिकार
१८) धीरज का बाँध
१९) तालाब का पंछी
२०) दो सेक्रेटरी
२१) मुख्यद्वार
२२) हड़ताल
२३) इज्जत का सवाल

२४) बुझी हुई लालटेन
२५) निर्णय
२६) प्रश्नाहत जिन्दगी ।

इस उपन्यास की कथावस्तु बहुत ही सीधी-साधी है । शिक्षकों की दयनीय दशा, राजपूर कस्बे की गतिविधि, साम्प्रदायिकता, शिक्षकों का शोषण जैसे कम वेतन देना, वेतन रोक लेना, कृषि-योजना के नामपर छात्रों से परिश्रम लेना, नगर - परिषद के चुनाव आदि तत्थ्यों का विवेचन इस उपन्यास की विषयवस्तु है ।

इस उपन्यास का मुख्य विषय राजपूर कस्बे का ` हिन्दू इंटर कॉलेज ` है । इस कॉलेज में कुछ मास्टारों और लेक्चरारों की जगहें भरने के लिये इंटरव्यू होते हैं । इंटरव्यू के लिये बहुत से उम्मीदवार आते है । कुछ एक उम्मीदवारों के नाम हैं - असरार, माथूर, पाठक, श्रोत्रीय, राजेश्वर ठाकूर, सत्यव्रत , हरीश, रोहतगी, पाण्डे आदि । कॉलेज की मैनजिंग कमेटी के पदाधिकारी और कॉलेज के प्रभारी प्राचार्य उत्तमचंद सलेक्शन कमेटी में होते है । उम्मीद्वारों को कई प्रश्न पूछे जाते हैं । जिसकी पहुंच होती है, उसी को चुन लिया जाता हैं । मैनेजिंग कमेटी के अध्यक्ष हैं लाला हरीचंद । हरीचंद बडे चालाक होशियार व्यक्ति हैं । इनकी बात सभी लोग मानते हैं ।

कथानायक सत्यव्रत गुरूकुल में पढा हुआ सत्य मार्गपर चलनेवाला, शांतिप्रिय, मन-वचन, और कर्म से शुध्द युवक है । इन्ही गुणों के कारण उसकी नियुक्ति हुयी हैं । राजेश्वर ठाकूर की नियुक्ति उसकी पहुँच के आधारपर होती है । ` किसमें इतना गुर्दा है जो मेरा सलेक्शन रोक दे ? कॉलेज की ईंट से ईंट बज जायेगी । ठकुरान के तीन सौ लडके है कॉलेज में । अगर मुस्लिम-स्कूल में चले गये तो यहाँ तनख्वाह भी नहीं पटेगी मास्टरों की । ` [१] राजेश्वर ठाकूर का यह कथन उसकी पहुँच बल को स्पष्ट करता हैं । राजेश्वर ठाकूर मावले के ठाकूर का पुत्र था । मैनेजिंग कमेटी के सेक्रेटरी गनेशीलाल, उपाध्यक्ष चौधरी नत्थुसिह, अध्यक्ष लाला हरीचंद तीनों के स्वार्थ इस गांव से जुडे रहते हैं ।

` हिन्दू इंटर कॉलेज ` में जयप्रकाश नामक पूर्व नियुक्त अध्यापक है, जो सदैव

यथार्थ की ओर संकेत करता है। जयप्रकाश तेज, चालाक और चिंतनशील प्रकृति का युवक है। सत्यव्रत से उसका परिचय होता है। दोनों के विचार अलग अलग होनेपर भी दोनों मित्र बनते हैं। जयप्रकाश सत्यव्रत को 'कॉलेज मैनेजिंग कमेटी' के पदाधिकारीयों का स्वार्थ, उनके क्रिया-कलाप की जानकारी देता है। कॉलेज की कृषि योजना और हॅास्टल दोनों योजनाओं का जयप्रकाश विरोधी है। उसे इन दो योजनाओं में स्वार्थ शोषण का जाल दिखाई देता है।

कॉलेज की मैनेजिंग कमेटी कॉलेज के मैदानपर कृषि-योजना आरंभ करती है। कृषि योजना में ग्रामीण छात्रों से शारीरिक परिश्रम लेकर अच्छी फसल उगवा लेती है। परन्तु उसका लाभ छात्रों को नहीं मिलता। अध्यक्ष और दूसरे पदाधिकारी उसकी आय हडप लेते हैं। ये लोग कृषि योजना में श्रम उठानेवाले छात्रों को विशेष छूट भी देते हैं। जैसे वे छात्र कभी भी कॉलेज आ- जा सकते हैं। उनकी हाजिरी लग सकती है। इस प्रलोभन से बहुत से छात्र उक्त योजना की ओर आकर्षित होते हैं। इसी योजना में काम करनेवाले सारे छात्र परिक्षाओं में असफल हो जाते हैं। इसी बात का दु:ख जयप्रकाश को होता है। छात्रों के अहित को समझकर जब जयप्रकाश कृषि योजना के इंनचार्ज उत्तमचंद से कहता है कि परिक्षाओं के दिनों में छात्रों से श्रम न लिये जाए तो उसे प्रिंसिपल द्वारा लिखित चेतावनी मिलती है -- "अध्यापक जयप्रकाश कॉलेज में गांव और शहर की बात उठाकर गांवो के लडकों का एक अलग दल बनाना चाहते हैं जो सर्वथा अवांछनीय है। इस तरह का वातावरण किसी भी संस्था के स्वस्थ विकास के लिये सर्वथा घातक है। यदि अध्यापक ने अपनी त्रुटि का शीघ्र सुधार न किया तो अनिच्छा पूर्वक उन्हें संस्था की सेवाओं से निवृत्ति दे दी जायेगी।"[२] इस प्रकार कृषि योजना का विरोध मैनेजिंग कमेटी का विरोध मानकर जयप्रकाश के विरोध को दबा दिया जाता है। जयप्रकाश किसी का साथ न रहने से चुप रहता है।

नये अध्यापकों में राजेश्वर ठाकूर का समर्थन पाकर जयप्रकाश फिर से कृषि-योजना का विरोध करने लगता है। परन्तु इस बार विरोध का रूप अलग

रहता है। राजेश्वर के परिचित छात्रों और अपने परिचित छात्रों के बलपर जयप्रकाश कृषि-योजना को समाप्त कर देने में सफल हो जाता है। परिक्षाओं की तैयारी करने के दिनों में भी संबंधित छात्रों को उस योजना में कठोर परिश्रम करने पडते हैं, जिसका परिणाम छात्र फेल हो जाते हैं। इसी तथ्य को समझकर जयप्रकाश कृषि योजना का विरोध करते रहता है।

कृषि योजना असफल होने के बाद कॉलेज की मैनेजिंग कमेटी हॉस्टल खोलकर देहात से आये छात्रों का शोषण करती है। हॉस्टल से मिलनेवाला आर्थिक लाभ अध्यक्ष लाला हरीचंद और गनेशीलाल को ही मिलता है। हरीचंद की खाली घुडसाल में हॉस्टल खुलवाने और उसका भारी-भरकम किराया तय कराने में सेक्रेटरी गनेशीलाल हरीचंद का साथ देता है। इसके बदले में हॉस्टल के सामने होटल खोलकर उसमें हॉस्टल के छात्रों को भोजन करनेपर विवश करने के लिये गनेशीलाल हरीचंद से सहायता चाहता है। इस प्रकार हरीचंद और गनेशीलाल दोनों को हॉस्टल से लाभ मिलता है। गनेशीलाल के होटल में घटिया भोजन रहने से हॉस्टल के छात्र वहाँ भोजन करना बंद कर देते हैं और हॉस्टल में ही अपना भोजन बनवाते हैं। इससे गनेशीलाल के आर्थिक लाभ को धक्का पहुँचता है। फिर उसी होटल में खाने के लिये छात्रों पर जोर जबरदस्ती की जाने लगती है। छात्र हरीचंद के चुनाव के अवसर हड़ताल कर बैठते हैं। इसके पिछे जयप्रकाश की प्रेरणा होती है। हॉस्टल की आड में छात्रों के शोषण को देखकर जयप्रकाश हॉस्टल का भी विरोध करता है। गनेशीलाल ने आर्थिक लाभ को ध्यान में रखकर हॉस्टल के सामने होटल खुलवाया था, परन्तु छात्र खाना न खाने से उसका स्वार्थ आहत होता है तो वह अध्यक्ष हरीचंद पर दबाव डालकर छात्रोंपर जबरदस्ती करवाता है। इसकी तीव्र प्रतिक्रिया छात्रों में होती है। हॉस्टल का सुपरिटेंडेंट सत्यव्रत जानता है कि गनेशी--लाल के होटल का खाना अच्छा नहीं है। छात्रोंद्वारा बनाया हुआ हॉस्टल का खाना उसे होटल के खाने से ज्यादा पवित्र और स्वादिष्ठ लगता है। इसलिये हरीचंद को वास्तविकता समझाने के उद्देश्य से कहता है " मैं आपसे निश्चित रूप से

कह सकता हूँ कि हास्टल का खाना स्वास्थ्य के लिए किसी भी दृष्टि से अहितकर नहीं है। मैं आजकल स्वयं वही खा रहा हूँ।"[3] सत्यव्रत छात्रों का हित जानता है, इसी कारण वह छात्रों का समर्थन करता है।

उपाध्यक्ष चौधरी नत्थुसिंह की बेटी विमला का सत्यव्रत से परिचय होता है। इंटरव्यू में चुने जाने के बाद आर्य समाज मंदीर में हुये होम-हवन के समय दोनों की पहली भेंट हुयी थी। उसी भेंट में विमला सत्यव्रत की ओर आकर्षित हुयी थी। होस्टल के पास ही चौधरीजी का घर है। सत्यव्रत सुपरिटेंडेंट होने के बाद चौधरीजी के कहनेपर विमला को पढाने उनके घर जाता है। विमला रोमैंटिक प्रकृति की युवती है। वह गुरु-शिष्य के पवित्र संबंध का एहसास नहीं करती और सत्यव्रत की ओर दिन-ब-दिन आकर्षित होती जाती है। वह पढाई के वक्त सत्यव्रत का स्पर्श पाने का प्रयत्न करती रहती है। सत्यव्रतपर गुरुकुल के आदर्श संस्कारों का प्रभाव है। उसके मन में कोई मैल नहीं है। लेकिन वह विमला को सीधे रोक भी नही पाता। सबकुछ जानते हुए भी सत्यव्रत को विमला की निकटता सुखद लगती है। कभी-कभी सत्यव्रत का मन भी विमला के सानिध्य से डांवाडोल हो जाता है। क्षणिक भावावेग में वह कह उठता है "तुम ... तुम्हें कैसे बताऊँ कि तुम मुझे कितनी अच्छी लगती हो।"[4] पर अपनी शिक्षा संस्कार संयम का ध्यान आनेपर वह संभल भी जाता है। सत्यव्रत कर्तव्य को अधिक महत्व देता है। संयम को दुर्बलता के सामने पराजित होते हुए नहीं देख सकता इसलिये वह विमला से कहता है " मैं आजीवन तुम्हारे सौन्दर्य का तटस्थ द्रष्टा - भर रह सकता हूँ, भोक्ता नहीं हो सकता।"[5] इस प्रकार सत्यव्रत स्वयं को शांत अविचलित बनाये रखता है। एक मध्यरात्रि विमला सत्यव्रत के कमरे में जाकर प्रणय की याचना करती है। सत्यव्रत अपने स्थान से डिग नहीं पाता तो विमला अपने प्रेम के प्रति सत्यव्रत की उदासिनता देखकर कहती है --" मैं तुम्हे खूब समझ गयी हूँ। तुम ... तुम या तो ढोंगी हो या... या नपुंसक।"[6] कहकर अपना क्रोध प्रकट करती है। सत्यव्रत के अनुसार विमला शिष्या है, आत्मजा है, वह कभी भी अर्धांगिनी नहीं हो सकती।

जयप्रकाश गुरु-शिष्या के पवित्र संबंध पर विचार प्रकट करता है कि ऐसे संबंधों की ओर में जो लोग अपनी अतृप्त काम-वासनाओं को तृप्त करते है, वे स्वयं के प्रति अन्याय करते हैं।

राजपूर कस्बे में मुस्लिम इंटर कॉलेज भी है। दोनों कॉलेज साम्प्रदायिकता की बुनियाद पर खड़े हैं। ये कॉलेज नहीं बल्कि शिक्षा की दुकाने है, जिसमें कॉलेज को प्राप्त शासकीय अनुदान हड़प लिया जाता है। आलोच्य उपन्यास में गुँगे हलवाई की एक प्रासंगिक कथा भी है। गूँगे हलवाई को कॉलेज की प्रत्येक घटना मालूम होती है। कॉलेज के विद्यार्थी, अध्यापक उसकी दुकानपर चाय पीने के लिये आते हैं। यह उपन्यास अनेक सवालों को उठाता है और उनके जवाब भी देता है।

अंत में आर्थिक लाभ उठानेवाले हरीचंद, गनेशीलाल को अध्यापकों के विरुध्द कार्यवाही करने का अवसर मिलता है। सत्यव्रत को कॉलेज सेवा हटाया जाता है। जयप्रकाश, राजेश्वर को चेतावनी दी जाती है। उनके हितैषी मैनेजिंग कमेटी में रहने से उन्हें सेवामुक्त नहीं किया जाता। सत्यव्रत महसूस करता है कि सत्य की पराजय और असत्य की विजय हुयी है, सत्य से लड़ना इतना आसान नहीं है। जीवन के छोटे-छोटे सवालों को न समझने से सत्यव्रत को नौकरी से हाथ धोना पड़ता है।

२.३ आंगन में एक वृक्ष --

यह दुष्यन्तजी का दूसरा उपन्यास है। उनके प्रथम उपन्यास 'छोटे-छोटे सवाल' के पाँच वर्ष बाद सन १९६८ में इस उपन्यास का प्रकाशन हुआ। १०६ पृष्ठों का यह उपन्यास चार अध्यायों में विभाजित है। इसकी शैली आत्मकथात्मक है। 'आंगन में एक वृक्ष' एक जमींदार परिवार की कहानी प्रस्तुत करता है। जमींदारों की क्रूरता, अय्यासी, चालकी, संकीर्णता, आडंबर, जमींदारी व्यवस्था का अंत आदि सभी बातें इस उपन्यास में मिलती है। कथा कहने वाला एक छोटा बालक है - छोटे। छोटे अपनी माँ तथा मँझावली भाभी से विगत कथा को कहानी के रूप में सुनता है और बाल सुलभ

अनेक प्रश्न पूछता है । इसकी कथावस्तु सिलसिलेवार समझने में कठिनाई होती है । पाठक उपन्यास को पढने के बाद कथानायक चंदन के बारे में सोचता रहता है ।

उपन्यास के प्रथम अध्याय में नायक चंदन के गाँव राजपुर की कहानी है । किशोर चंदन शरारती और नटखट है । वह अपनी मंझावली भाभी से हँसी मजाक करते रहता है । गाँव में आवारा घूमना, गाँव की लडकियों को अपने प्रेम जाल में फँसाना उसकी आदत है। चंदन के पिता चौधरी साहब शराब पीते रहते हैं । उनके अनुकरण पर वह भी शराब पीने लगता है । एक दिन चंदन इतनी शराब पी लेता है कि वह बेहोश हो जाता है । उसे उसके मित्र घर पहुँचा देते हैं । पिता चौधरीजी इस अपराध के लिये चंदन को बहुत पीटते हैं । उसे गालियाँ देते हैं ` हरामजादे आज मैं तुझे पिलाऊँगा । साले ने जिन्दगी को शराबखाना बना लिया है ।'[७] चंदन दर्द भरी आवाज में क्षमा याचना करने लगता है । विमाता बीजी चंदन का पक्ष लेते हुये चंदन को बचाती है । वह चंदन के बिगडने का दोष पति चौधरीजी को देती है । पीटे जाने से चंदन के स्वाभिमान को ठेस पहुँचती है । वह `बीजी अब मैं यहाँ कभी नहीं आऊँगा ।'[८] कहकर अपनी मौसी मैनाजी के पास मुरादाबाद चला जाता है ।

दूसरे अध्याय में चौधरीजी के विवाहों, जमींदारी के क्रिया-कलापों का तथा छोटे के मनपर पडनेवाले जमींदारी व्यवस्था के प्रभाव का विवेचन है । मुरादाबाद के जमींदार वकील रामप्रसाद की दो बेटीयाँ हैं । अशर्फी कुँवर और कनक कुँवर । छोटी बेटी कनक कुँवर का विवाह चौधरी के साथ होता है । रामप्रसादजी ने बडी बेटी अशर्फी कुँवर का विवाह अच्छे संपन्न परिवार में किया था, पर अशर्फी विवाह के तीसरे दिन ही ससुराल से वापस आती है । और फिर वापस न जाने का निश्चय करती है । रामप्रसाद इस निश्चय को स्वीकार करते हैं और अपनी बेटी को घर में रख लेते हैं । अशर्फी कुँवर को परिवार में मैनाजी कहा जाता था । वह अपना सारा समय धार्मिक विधि-विधानों में बिताने लगती है । दाम्पत्य जीवन के प्रति मैना को विरक्ति हो गयी थी । वकील रामप्रसाद के कोई पुत्र नहीं था । इसी

कारण वे चैाधरीजी को घर-जमाई बना लेते है। थोडे दिनों बाद कनक कुँवर चंदन को जन्म देने के बाद मर जाती है। वकील रामप्रसाद अपने दामाद चैाधरीजी का दूसरा विवाह रचाते हैं। दूसरी पत्नी का नाम बीजी है। विवाह उपरान्त बीजी को पुत्र होता है,जिसे छोटे कहा जाता है। वकील रामप्रसाद की बडी बेटी मेनाजी अपने बहनोई की दूसरी पत्नी बीजी से क्रूरता से पेश आती है। मेनाजी चंदन को भी बीजी से दूर रखती है। एक दिन बीजी चंदन को अपने पास बिठाकर खिलाती है। यह बात मेनाजी बर्दाश्त नहीं कर पाती कहती हैं आगे इसे हाथ मत लगाना मैं बताये देती हूँ।"[१] इससे बीजी को काफी दु:ख पहुँचता है। चैाधरी बीजी की ओर ठीक तरह से ध्यान नहीं देते। इसी बीच वकील रामप्रसाद की मृत्यु होती है। वकील साहब की जायदाद को लेकर मेना और चैाधरी में घात-प्रतिघात चलता है। सारी जायदाद चंदन के नाम होने से मेना चंदन को अपने स्नेह-बंधन में बाँध रखती है। उसकी हर जिद पूरी करती है। मेना अपने बहनोई और उनकी दूसरी पत्नी बीजी के बीच उदासी उत्पन्न करने का प्रयत्न करती है। इसके लिये वह नैाकर द्वारा भभूत का भी प्रयोग करती है। पति-पत्नी को मिलने से रोकती रहती है। रामप्रसाद की मृत्यु के बाद सारे परिवार पर मेनाजी का प्रभाव रहता है। नैाकर चाकर मेनाजी को खुश करने के लिये चैाधरी और बीजी की खबरे मेनाजी को सुनाते रहते है। एक दिन तंग आकर बीजी अपने पति से एकांत में मिलकर भभूत की घटना जायदाद संबंधी मेनाजी की कूटनीतियाँ बताती हैं। चैाधरी चंदन को साथ लेकर गांव वापस जाने की तैयारी करते हैं। चंदन के जाने को लेकर मेना और चैाधरी में काफी वादविवाद होता है। चंदन अपने पिता चैाधरी के साथ रहना पसंद करता है। चैाधरीजी चंदन,बीजी को लेकर वापस बीसलपुर आते है।

वकील साहब की जमीन में से बडे हिस्सेपर चैाधरी का अधिकार हो जाता है। मेना से कोर्ट-कचहरियों में लडकर चैाधरीजी चंदन के पिता का अधिकार प्राप्त करते हैं। जमीन से मिलने वाली आय से चंदन के पिता चैाधरीजी राजपुर में अपने टूटे-फूटे मकान को नया रूप देते हैं। चंदन अपने पास रहने के लिये उसे विशेष छूट देते है। उसे शराब और नटनियों के पीछे पडने के लिये प्रेरित करते हैं।चंदन

को शराब की इतनी आदत पडती है कि वह कई बार बेहोश होकर गिरता-पडता रहता है। चंदन के अधिक पीनेपर बीजी चिल्लाती तो चौधरी उसे डाँट देते' तुम जरूर उसे यहाँ से भगाकर छोडोगी।'[१०] बीजी मन मारकर चुप हो जाती।

उपन्यास का तीसरा अध्याय प्रथम अध्याय के अंत से जुडा हुआ है। पिता द्वारा पीटे जाने से चंदन मुरादाबाद जाने का निश्चय कर लेता है। उसके पास पैसे नहीं रहते। इसी कारण वह छोटे को मंढावली मामी के पास पैसे लाने के लिये भेजता है। चंदन को राजपुर से जाते देख अनेक लोग दु:खी होते हैं। खासकर मंढावली मामी को अधिक दु:ख होता है। उसके चंदन से नजदीकी संबंध रहते हैं। मुरादाबाद पहुँचकर चंदन फिर से शराब में डूब जाता है। अधिक शराब पीने के कारण चंदन बूरी तरह से बीमार पड जाता है। डॉक्टर शराब पीने के लिए मना कर देते हैं। चंदन अपने मित्र सोरनसिंह से मिन्नत करके कच्ची शराब मंगवाकर पी जाता है। इससे उसके आंतों के जख्मों से खून आने लगता है। जब तक डॉक्टर आते शराब उसके जीवन को पी जाती है। गांववालों को मुंशी अतिकुरहमान द्वारा चंदन की मृत्यु का समाचार मिलता है। गांव के सभी लोग विलाप करने लगते हैं। चंदन की मृत्यु का गहरा आघात छोटे पर होता है। विमाता बीजी जिसका चंदन पर अधिक स्नेह था, सोरनसिंह को कोसने लगती है। इस पर चौधरीजी कहते है --" उसका वक्त आ गया था और शायद ईश्वर को यही मंजूर था।.... होनी को कौन टाल सकता है ?[११]

उपन्यास के चौथे अंतिम अध्याय में चंदन के मंढावली मामी को लिखे [illegible] का उल्लेख है। उस पत्र में पांच सौ रुपये रहते है जो चंदन ने मंढावली मामी के लिये रखे थे। वह पत्र छोटे पढता है और उसे मंढावली मामी को दे आता है। उस पत्र के अंत में लिखा हुआ होता है --' मैं मरुंगा तो शराब में नहीं, मुहब्बत के समुद्र में डूबकर मरुंगा।' इति[१२]

२.४ दुहरी जिन्दगी --

दुहरी जिन्दगी दुष्यन्तजी का तीसरा अप्रकाशित उपन्यास है। इसमें उन्होंने मनुष्य की सच्चाईयों से दूर भागने की कोशिश तथा संबंधों के खोखलेपन को प्रस्तुत किया है।

उत्तरप्रदेश के इलाहाबाद नगर में स्वदेश पाठक अपनी सौतेली माँ के साथ रहती है। दुष्यन्तजी के मित्र कमलेश्वर जी ने स्वदेश पाठक को अर्पिता नाम दिया है। अर्पिता को देश नाम से भी संबोधित किया जाता है। वह २२ वर्ष की कामुक क्रोधी स्वभाव की युवती है। वह भारतीय प्रकाशन गृह के सेल्स विभाग में नौकरी करती है। कमल और राजीव दोनों मित्र है। कमल देश का प्रेमी है। उसके साथ देश के विवाह की चर्चा भी चली थी। राजीव कवि है। उसकी रेलयात्रा में देश से पहचान होती है। राजीव इलाहाबाद शोध कार्य करने के लिये आता है। देश राजीव को अपने घर ठहरने के लिये कहती है। यह बात कमल को अच्छी नहीं लगती।

राजीव को एक साल की बेटी है अन्नी, जिसे देश बहुत ही चाहती है। नौकरी से लौटने के बाद वह अन्नी को अपनी पीठपर बिठाकर उससे खेलती है। इससे माँ बहुत ही बिगड़ती है, लेकिन देश माँ को फटकारकर चूप बिठा देती है। एक दिन चाय पीते समय देश राजीव के गले में हाथ डालती है और 'भैयूया' कहती है। 'भैयूया' संबोधन से राजीव चौंक जाता है। राजीव की उँगलियाँ उसके वक्षपर ठहरती है। इस संबोधन से राजीव को अपना अतीत याद आता है। जब वह लखनऊ से इलाहाबाद आ रहा था, तब उसका परिचय रेल में देश से हो गया था। जब वे प्लेटफार्मपर उतरे तब कमल ने उस परिचय को घनिष्ठता में बदलने के लिये यह संबोधन जबरदस्ती राजीव के मत्थे मार दिया था।

राजीव जानता है कि कमल और देश के प्रेम संबंध बड़े गहरे है। इसी कारण राजीव से ईर्ष्या करता है। अधिकार पाने के लिये बेचैन रहता है। वह देश की माँ को कमल के खिलाफ उकसाते रहता है। एक दिन माँ कमल और देश को कमरे में

पकड़ लेती है। और कड़ी बातें सुनाती है। देश एक न सुनकर उल्टे माँ को आड़े हाथों लेती है। इससे डरकर माँ भाग जाती है। राजीव बाद में उन्हें मनाकर ले आता है।

राजीव ,कमल दोनों का एक मित्र है हरीश। हरीश इलाहाबाद से आकर एक होटल में ठहरा है। हरीश स्पष्टवादी है। संबंधों के खोखलेपन और सच्चाइयों को नकारकर जीना उसे पसंद नहीं है। इसी कारण उसने निर्मला मेहता नामक लड़की के प्रेम को ठुकरा दिया था। निर्मला ने अपनी सहेलियों को बताया था कि हरीश मुमेरा भाई है। निर्मला की यह बात हरीश को पसंद नहीं आयी थी, इसलिये उसने सत्य को न स्वीकारनेवाली निर्मला को ठुकरा दिया था।

देश पर अधिकार पाने के लिये राजीव और कमल दोनों में स्पर्धा चलती है। राजीव को एक बात परेशान करती रहती है कि शारीरिक स्तरपर सब कुछ पा लेने पर भी कुछ ऐसा है,जिसे वह प्राप्त नहीं कर पाया और कमल ने पाया है। वह देशपर केवल स्वयं का स्वामित्व चाहता है। इसमें वह असफल रहता है। राजीव देश का रहस्य जानने के लिये उसकी डायरी पढता है। डायरी से पता चलता है कि देश ने कमल के साथ कुछ क्षण शिमला में बिताये है। एक दिन राजीव के कोई संबंधी को देश अपने घर ठहरा देती है। सर्दी के दिन हैं। घर में अधिक कपड़े न होने से राजीव और देश एक ही बिस्तरपर सोते हैं। एक बिस्तरपर होने से दोनों का संयम टूट जाता है।

देश राजीव और कमल दोनों को खिला रही है,यह बात हरीश के ध्यान में आती है। वह दोनों को फटकारते हुये कहता है कि देश तुम दोनों की कीमत पर अपने अहं की पतंग उड़ा रही है और तुम लोग सच्चाई से भागकर [illegible] रहे हो। यह भी हो सकता है कि वह तुम दोनों में पूर्णत्व प्राप्त करती हो।

राजीव को काम की तलाश रहती है। वह देश के विभाग में अनुवाद का काम करना चाहता है। देश को यह पसंद नहीं आता। वह कहती है कि मैं जो

पैसा कमा रही हूँ, वह क्या तुम्हारा नहीं ? देश राजीव के अटैच में पैसे रखती है। इससे राजीव को अपने पौरुष के प्रति घृणा उत्पन्न होती है।

देश 'दुहरी जिन्दगी' नाटक में भूमिका करती है। इस नाटक में एक ऐसी नारी की विडम्बना चित्रित की गई है, जो पति और प्रेमी दोनों के प्रति ईमानदार होना चाहती है, लेकिन हो नहीं पाती। इस नाटक के प्रेस-शो में देश नाटक के कुछ संवाद बोलने में असफल रहती है। नाटक समाप्त होने के बाद राजीव, कमल, हरीश तीनों नाटक पर विचार करते है। हरीश फिर से देश की चर्चा करता है कि तुम दोनों निहायत दुच्ची और सीमित जिन्दगी जी रहे हो। देश तुम दोनों से पूर्णता प्राप्त करती है। तुमसे मानसिक स्तरपर और राजीव से शारीरिक स्तरपर। थोडी देर बाद तीनों एक दूसरे से अलग होते है।

राजीव और देश दोनों में तनाव बढता है। वे एक-दूसरे से बात तक नहीं करते। अम्मा इसका कारण बताती है कि अन्नी को घर भेज देने से देश नाराज है। लेकिन राजीव को शक है कि शायद कमल ने उसे सबकुछ बता दिया होगा। राजीव मकान के उपर खडा होकर देखता है कि एक रिक्शे से कमल और देश उतर रहे हैं। उनमें विवाद चला है। राजीव को उनके वाक्य सुनाई देते है -- 'मुझपर विश्वास नहीं तो चलकर पूछ क्यों नहीं लेते --' 'अब पूछने को क्या रह गया है।'[१३] घर आकर देश राजीव को लक्ष्य करके कहती है 'अम्मा इससे पूछो कि यह जाएगा या मैं कोई और ठिकाना खोज लूँ।'[१४] जवाब में राजीव कहता है -' अम्मा इससे कह दो कि यह नाटक पर उसी की पुकार करे हो।'[१५] राजीव अपना सामान बाँधकर चल देता है। प्लेटफार्म पर उसके मन में विचारों का द्वन्द्व जाग उठता है। अचानक राजीव को हरीश मिल जाता है। राजीव सारी बातें हरीश को बताता है। इसपर हरीश कहता है कि यह तो एक दिन होना ही था। मैं जानता था कि जिस दिन भी तुम सच्चाई के लिये झुकोगे या उसके नजदीक जाने की कोशिश करोगे उसी दिन वह तुमसे कट जायेंगी। भावावेग में राजीव की आँखों में आँसू आते है। वह हरीश से कहता है --' तुम कमल से मेरी तरफ से माफी माँग लेना।

मैं उससे मिलकर नहीं जा सका ।[१६] रेल चलती है । राजीव विदा लेता है । यहाँ कथानक समाप्त हो जाता है ।

२.५ निष्कर्ष ---

निष्कर्षत हम कह सकते है कि 'छोटे-छोटे सवाल' उपन्यास दुष्यन्तकुमार का सफल उपन्यास है । दुष्यन्तजी ने आजादी के बाद शिक्षा-क्षेत्र की धांधलियों को कथावस्तु का विषय बनाया । भ्रष्टाचारी, स्वार्थी, शोषक लोग अपने आर्थिक और राजनीतिक स्वार्थों की पूर्ति के लिये शिक्षा-संस्थाओं का कैसा उपयोग करते हैं। यह आलोच्य उपन्यास के परिचय में स्पष्ट हो जाता है । आलोच्य उपन्यास में शिक्षा-क्षेत्र के भ्रष्टाचार का चित्रण होने से यह रचना पढनीय बन गयी है ।

उसी प्रकार 'आँगन में एक वृक्ष' उपन्यास जमींदारों के जीवन को तथा बाल मनोविश्लेषण को स्पष्ट करता है। दुष्यन्तकुमार ने बचपन में जमींदारों का जीवन, उनकी अय्यासी, क्रूरता, ठाठ-बाँट सभी को देखा और उसका जो प्रभाव उनके मनपर पडा उसी का विवेचन इस उपन्यास में मिलता है । डॉ. हरिशरण शर्मा के अनुसार इस उपन्यास की कथा दुष्यन्तजी के परिवार की कथा है । चंदन के रूप में दुष्यन्तजी के बडे सौतेले भाई प्रकाश नारायणसिंह त्यागीजी है । चौधरी के रूप में पिता भगवत सहायजी है, तो बीजी के रूप में उनकी माता है और छोटे के रूप में स्वयं दुष्यन्तजी है । कुल मिलाकर यही कहा जा सकता है कि यह उपन्यास अस्त हो रही जमींदारी व्यवस्था को उजागर करता है ।

'दुहरी जिन्दगी' दुष्यन्तजी की अप्रकाशित रचना है । इसमें उन्होंने असफल प्रेम कहानी बतायी है । राजीव, कमल और देश तीनोंके आपसी संबंध

12300

A

बताकर यह स्पष्ट किया है कि मनुष्य सच्चाईयों से दूर कैसे भागता है। दुष्यन्तकुमार के इन तीनों उपन्यासों के विषय अलग अलग हैं। तीनों में उपन्यासों की खूबियाँ मिलती हैं।

संदर्भ

१ - छोटे-छोटे सवाल, ले.दुष्यन्त, पृ.१४

२ - - वही - पृ.४०

३ - - वही - पृ.१७८

४ - - वही - पृ.१६९

५ - - वही - पृ.१७०

६ - - वही - पृ.२४४

७ - आंगन में एक वृक्ष - ले.दुष्यन्त - पृ.१६

८ - - वही - पृ.३२

९ - - वही - पृ.५१

१० - - वही - पृ.७९

११ - - वही - पृ.१०१

१२ - - वही - पृ.१०६

१३ - डॉ.हरिशरण शर्मा - दुष्यन्तकुमार और उनका साहित्य

१४ - - वही - पृ.२९०

१५ - - वही - पृ.२९०

१६ - - वही - पृ.२९१ ।